सकट चौथ व्रत कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार, एक बार देवों के देव महादेव ने भगवान शिव से कार्तिकेय और भगवान गणेश से पूछा कि उनमें से कौन देवताओं के कष्ट दूर कर सकता है। तब कार्तिकेय और गणेशजी दोनों ने स्वयं को इस कार्य के लिए सक्षम बताया। इस पर भगवान शिव ने कहा कि तुम दोनों में से जो भी पृथ्वी की परिक्रमा करके पहले आएगा वही देवताओं की सहायता के लिए जाएगा। यह वचन सुनकर कार्तिकेय अपने वाहन मोर पर बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा करने निकल पड़े। लेकिन गणेश जी इस सोच में डूब गए कि अगर वह चूहे पर सवार होकर पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे तो इस कार्य को पूरा करने में उन्हें बहुत समय लगेगा। तभी उसे एक उपाय सूझा।

वह अपने स्थान से उठा और अपने माता–पिता की सात बार परिक्रमा करके वापस बैठ गया। परिक्रमा करके लौटने पर कार्तिकेय ने स्वयं को विजयी घोषित किया। शिवजी ने गणेशजी से पृथ्वी की परिक्रमा न करने का कारण पूछा। तब गणेश जी ने कहा– 'माता–पिता के चरणों में सारा संसार है।' यह सुनकर भगवान शिव ने गणेशजी को देवताओं के कष्ट दूर करने का आदेश दिया और गणेशजी को आशीर्वाद दिया कि जो भी चतुर्थी के दिन श्रद्धापूर्वक तुम्हारी पूजा करेगा और रात्रि में चंद्रमा को अर्घ्य देगा, उसके सभी कष्ट दूर हो जाएंगे।

pdfinbox.com